मुकदमे की पैरवी के लिए आगरा आते तो इस जैन मित्र के यहां ठहरते थे, वहां आप के पिता श्री बलदेव सिंह का परिचय जैन साधुओ से हुआ। श्री बलदेव सिंह जैन मुनियों के प्रवचन सुनने लगे। जैन मुनियों का तप, जप व स्वाध्याय पूर्ण जीवन उन्हें अच्छा लगता था। बलदेव सिंह व उनकी धर्मपत्नी अपनी संतान से बहुत स्नेह करते थे।

एक बार श्री बलदेव सिंह अपनी बेटी पार्वती को लेकर आगरा में आए। वहां जैन मुनियों का प्रवचन सुना। दर्शन वन्दन किया। पहली ही भेट में बालिका पार्वती जैन मुनियों के जीवन से बहुत प्रभावित हुई। वह आचार्य नागर मल्ल जी से बहुत प्रभावित हुई। आचार्य श्री ने ज्योतिष के आधार पर श्री बलदेव सिंह को बताया कि तुम्हारी बेटी साध ाारण बालिका नहीं है यह भविष्य में जैन धर्म की शोभा बढ़ाएगी! अच्छा है इस लड़की को आप जैन धर्म को समर्पित कर दो। श्री बलदेव सिहं ने कहा, "महाराज ! मैं आप की हर बात मानने को तैयार हूं, पर इतना बड़ा फैसला लेने से पहले मुझे इस बालिका की माता से विमर्श करना पड़ेगा।

वापिस आ कर माता-पिता ने सहमति से बालिका को आचार्य श्री को समर्पित करने का निर्णय किया। आचार्य श्री ने इस बालिका को साध्वीयों के सुपुर्द कर दिया। उस समय आप अल्पायु में थे। आचार्य श्री के शिष्य परिवार में आप ने जैन धर्म के शास्त्रों का अध्ययन शुरू किया। संस्कृत, प्राकृत, उर्दू, हिन्दी, गुजराती व फारसी भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया। आप ने थोड़ा अंग्रेजी भाषा का अध्ययन भी किया।

मात्र १३ वर्ष की आयु में आप अपनी ३ सखियों के साथ साध्वी बन गई। साध्वी बनते ही आप ने

शास्त्रों का अध्ययन गुरूओ से विधिवत् रूप से अर्जित किया। आप की ज्ञान पिपासा इतनी तेज थी कि आप ने शास्त्र अध्ययन के लिए योग्य गुरूणी की तलाश शुरू की। आप देहली पधारे, वहां साध्वी मेलों के संघ में शामिल हो कर विद्याध्ययन प्रारम्भ किया। साध्वी श्री का सारा जीवन क्रान्तिकारी था। उस समय समाज दहेज प्रथा, स्त्रियों में अशिक्षा, जात-पात, छुआ-छूत, वाल विवाह, व युवा वर्ग विभिन्न कुव्यसनों में फंसा हुआ था। आप ने इन बुराईयों के विरूद्ध कमर कसी। स्थान-स्थान पर खुले प्रवचन कर जैन ध्वज को उंचा फहराया। आज पंजाब में जितना साध्वी परिवार दिखाई देता है। अधिकांश का संबंध अप की परम्परा से है। आप ने अपने समय के सभी परम्पराओं के महात्माओं से धर्म चर्चाएं की थी। शेरे-पंजाव लाला लाजपतराय आप के परम भक्त थे। जैन धर्म छोड़, आर्य समाज ग्रहण करने के पश्चात भी वह उनके प्रवचन सुनने आते थे। वह आप को धर्म माता मानते थे। आप के जमाने में नाभा राज्यों में ब्राहमणों ने जैन साधुओ का प्रतिबंध नाभा नरेश हीरा सिंह से लगवा दिया। आप ने इस आज्ञा को भंग कर देवी चौंक नाभा में भाषण दिया। राजा के मंत्री आए। उन्होंने कुछ प्रश्न किए। जिनका साध्वी श्री ने विद्वतापूर्ण लिखित उत्तर दे कर लोगों की जैन धर्म के प्रति फैली आशंका का निवारण किया। उस के बाद कभी भी नाभा स्टेट में जैन मुनियों का प्रवेश वंद नहीं हुआ। महाराजा हीरा सिंह स्वयं आप के दर्शन करने पधारे। आप ने राजा को धर्म का प्रतिबोध दिया।

महासाध्वी के उपदेशों से अनेकों भव्य आत्माओं ने अपना कल्याण किया। जिन में कई लडकियां तो वहुत प्रतिष्ठित घराने से थीं। इन में रायकोट निवासी साध्वी श्री राजमति जी महाराज का नाम उल्लेखनीय है। इन्हीं साध्वी

श्री राजमति जी महाराज की शिष्य साध्वी श्री ईश्वरी देवी थी। साध्वी श्री ईश्वरी देवी जी की शिष्या साध्वी श्री पार्श्ववती जी महाराज थी। साध्वी श्री पार्श्ववती जी महाराज ही हमारी गुरूणी उप-प्रवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की दीक्षा गुरूणी थीं।

महासती पार्वती महान विदूषी थीं। वह हिन्दी भाषा की प्रथम जैन महिला लेखिका थीं जिन्होंने ४० से ज्यादा ग्रंथ हिन्दी साहित्य को प्रदान किए। उनके कुछ ग्रंथों का अनुवाद उर्दू भाषा में भी हुआ। उन्होंने अपने समय में जैनों के विभिन्न सम्प्रदायों के अतिरिक्त आर्य सामज के खण्डन का उत्तर सशक्त ढंग से दिया था। उनके ग्रंथ पढ़ने से उनकी योग्यता का पता चलता है। वह पंजाव सिंहनी थी। उनका भव्य शिष्य परिवार था। वह लेखिका के अतिरिक्त कवियत्रि थी। आप ने ढाल-चौपाई में अनेकों जैन चारित्र को पद्यमय ढंग से प्रस्तुत किया था। अभी यह ग्रंथ अप्रकाशित हैं।

ऐसी भव्य आत्मा को समर्पित है इंटरनैशनल पार्वती जैन अवार्ड जिसे वहुत से राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय विद्वान प्राप्त कर कृत-कृत हो चुके हैं। जिन में कुछ का वर्णन हम आगे संक्षिप्त में करेंगे। इसी महा साध्वी की स्मृति में हमारी समिति ने जैन ऐकता को प्रमुख रखते हुए इस अवार्ड की स्थापना की है। इस के दो लाभ हमें मिले। सर्वप्रथम तो इस अवार्ड के माध्यम से प्रवर्तनी श्री पार्वती जी महाराज उनके साहित्य व समाज को देन के वारे में संसार को पता चला। हमारी गुरूणी उपप्रवर्तनी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज के कार्य की जैन, अजैन समाज में प्रशंसा हुई।

इस का दूसरा लाभ वहुत महत्वपूर्ण था। इस के माध्यम से हम संसार के लब्धि प्रतिष्ठित जैन विद्वानों के

परिचय में आए। उनकी रचनाओं व कार्य से हम अवगत हुए। उन्हें इस अवार्ड के माध्यम से सम्मानित करने का हमें सौभाग्य मिला। मेरी धर्म के प्रति आस्था को नया आयाम मिला। यह अवार्ड भविष्य में हमारे सम्मान का कारण वना। पर हम इस सम्मान को अपना सम्मान नहीं मानते, वल्कि भगवान महावीर व जैन संस्कृति का सन्मान मानते हैं। इस सन्मान के माध्यम से हम वहुत सारे विद्वानों के संपर्क में आए। इस में कुछ एक का परिचय हम देना ठीक समझते हैं। इस का प्रथम अवार्ड संगारिया मंडी राजस्थान में डा० भट्ट के गुरू कलास वरून जर्मन को उनकी अनुपस्थिति में मिला। यह भव्य समारोह जैन युवा मण्डल ने जैन साध्वी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज की प्रेरणा से किया।

दूसरा अवार्ड डा० वी. भट्ट निर्देशक जैन चेयर को उनके निक्षेप सवंधी सूक्ष्म विवेचन के लिए मानसा में हमारी गुरूणी साध्वी स्वर्णकांता जी महाराज के सानिध्य में प्रदान किया गया। एक भव्य समारोह था। मानसा के विशाल जैन स्कूल में भव्य समारोह रखा गया। यह अक्षय तृतीया का इतिहासिक दिन था। यह दिन वर्षों तप करने वालों के लिए पवित्र दिन होता है। इसी दिन भारत वर्ष के जैन हस्तिनापुर व शत्रुंजय तीर्थों पर वर्षों तप का पारणा करते है। यह वर्षों तप का सवंध भगवान ऋषभदेव से है। उन्हें एक वर्ष तक तप करने के वाद हस्तिनापुर में राजा श्रेंयांस ने पारणा इक्षु रस से करवावा था। इसी की स्मृति में श्रमण वर्ग व साधु वर्ग इसी दिन तीर्थ व गुरू चरणों में इक्षु रस से पारणा करवाया जाता है। महासती जी का वरसी तप के पारणों भी उसी दिन था। इस में सर्वप्रथम मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन ने महासती का परिचय साध्वी स्वर्णकांता का परिचय व डा० भट्ट के कार्य का अपने लिखित भाषा में

उल्लेख किया गया। फिर एक जैन ट्राफी, शाल, प्रशस्ति पत्र व कुछ सन्मान राशी डा० भट्ट को दी गई। डा० भट्ट ने अपने भाषण में महासाध्वी श्री पार्वती जी महाराज के जीवन व उनकी साहित्य रचनाओं पर हिन्दी में भाषण दिया। डा० भट्ट मूलतः गुजराती है। उन्हें हिन्दी बोलने में कठिनाई आती है। जैन धर्म का उत्कृष्ट विद्वान हैं। अनेक भारतीय व विदेशी भाषाओं में पंडित हैं। अपने भाषण में उन्होंने साध्वी श्री को हर रचना पर विवेचन दिया। उन्हें महान धर्म रक्षिका की संज्ञा दी। उन्होंने महासाध्वी व हमारी समिति का, उन्हें यह अवार्ड के लिए: आभार प्रकट किया।

इस प्रकार इन अवार्डों की घोषणा होने लगी। हम वर्ष भर अच्छे साहित्य की तलाश में रहते। जो पुस्तक हमारी कसौटी पर ठीक उतरती, उस को अवार्ड का नाम साध्वी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज को प्रेषित कर दिया जाता। महासाध्वी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज हमारे द्वारा अनुमोदित रचना का निरिक्षण स्वयं करतीं। कई वार वह कृति और कृतिकार के वारे में चर्चा भी करती। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के वार्तालाप से उनकी शास्त्र ज्ञान के प्रति मर्मज्ञता के दर्शन होते हैं। इस अवार्ड के संवंध में मेरा लगातार यह प्रयत्न रहा है कि इस अवार्ड के लिए महिला लेखिका का चयन हो। चाहे यह कोई नियम नहीं था। मात्र इच्छा थी जिसका कारण यह था क्योंकि हमारी अवार्ड की नायिका एक विदूषी महिला है। इस की प्रेरिका भी एक महिला है। इस लिए मातृशक्ति के संगठन के लिए यह जरूरी है कि महिलाओं का सम्मान हो। भारतीय संस्कृति मातृ प्रधान संस्कृति है। ठीक है मध्यकाल में स्त्री और शुद्र को एक जी तराजू में रखा गया। पर श्रमण संस्कृति ने अनादिकाल से स्त्री को पुरूष के वरावर स्थान दिया। जैन

तीर्थंकरों के संघ में हमेशा साध्वीयों व श्राविकाओं की संख्या अधिकांश मात्रा में रही है। स्वयं श्रमण भगवान महावीर के श्री संघ में आर्य चन्दना सहित ३६००० साध्वीयों का परिवार था। इन साध्वीयों में हर देश, कुल जाति, रंग, नस्ल व वर्ण की साध्वीयां थी। भगवान महावीर के बाद जैन धर्म में श्रमणी में परिवार चलता रहा। जैन इतिहास साध्वीयों के कारनामों से भरा पड़ा है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पुत्रीयों ब्राह्मी, सुन्दरी का अपना इतिहास है। १६ तीर्थंकर भगवती मल्ली थीं। साध्वी राजुल की गौरव गाथा जैन इतिहास की शान है। पंजाब के स्थानकवासी इतिहास में सुनाम की साध्वी ज्ञाना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कहते हैं एक समय ऐसा भी आया, जब पंजाब में कोई साधू न रहा। ऐसे में सुनाम के श्री ज्ञाना जी महाराज ने अपने भानजे को संयम पथ पर आरूढ़ कर, साधु बनाया। उन्हें आगम का ज्ञान दिया। धीरे धीरे उनके शिष्य परिवार में साधुओं की संख्या बढ़ने लगी। समय आने पर साध्वी ज्ञाना जी ने उन्हें आचार्य पद से विभूषित किया। साध्वी पार्वती जी महाराज का ऐसे साध्वी परिवार से रिश्ता था जिस ने जैन धर्म की रक्षा के लिए सब कुछ समर्पित कर दिया।

अवार्ड का सिलसिला चालु हो चुका था। अब विद्वानों की खोज शुरू की। इस खोज में कुछ इतिहासक व्यक्तियों को अवार्ड दिए गए। जिस से अवार्ड की शोभा को चार चांद लग गए। हमने एक समारोह दिल्ली में साध्वी डा० सरिता जी महाराज के नेश्राय में रखा। इस में फ्रांस की प्रसिद्ध जैन विदूषी डा० सी. कैय्या व डा० नलिनि बलबीर पधारी। यह अवार्डो का सुझाव डा० भट्ट ने रखा था। उस जमाने में देहली में वीडियो ग्राफी आ चुकी थी। इस अवार्ड के वितरण से पहले हम साध्वी स्वर्ण कांता जी महाराज के

परिवार के यहां ठहरे। उनके निवास वीर नगर, गुड़ मंडी में है। यहीं महाराज संसारिक वडे भ्राता स्व. जगदीश चन्द्र जैन से मिले। वड़े सज्जन व्यक्ति थे। उन्होंने हमें अपने वच्चों की तरह रखा। उन्होंने महाराज श्री के दीक्षा से पहले के हालात, पाकिस्तान के समय की स्थितियां, लूटमार, महाराज की दीक्षा का आंखों देखा हाल सुनाया। १९४७ के वाद वह किस प्रकार अमृतसर, मेरठ व दिल्ली घूमते रहे। सारा दृश्य उनकी आंखों के सामने घूम रहा था। स्व. श्री जगदीश जैन भारत-पाक विभाजन को भूले नहीं थे। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के संसारिक छोटे भाई स्व० सुरेन्द्र कुमार जैन दिल्ली में रहते थे। सारा परिवार महाराज का हर तरह से ध्यान रखता। उन से वातें कर मेरे ज्ञान में बहुत वढ़ोत्तरी हुई। उनका ज्ञान अनुभव पूरक था।

सवेरे हमें अपने विदेशी मेहमानों से मिलने ओवराय कांटीनेंटल होटल जाना था। सुवह हुई, साध्वी श्री सरिता जी महाराज उस समय पी.एच.डी. नहीं थे। पर वह आगे पढ़ रहे थे। उन से हम प्रोग्राम तय कर चुके थे। इस लिए सुवह अपने विदेशी मेहमानों को मिलने पहुंचे। डा० कैय्या हमारी अंग्रेजी कम समझ रही थीं। परन्तु उनकी शिष्या डा० नलिनि वलवीर हिन्दी वोल सकती थीं। उन्होंने हमें हिन्दी में वात करने को कहा। उन्होंने वताया कि उनके पिता भारतीय व माता फ्रेंच हैं। उनकी माता जो फ्रांस उच्चायुक्त कार्यालय में हिन्दी पढ़ाने का कार्य करती है। उनकी संतान ही डा० नलिनि वलवीर है। उनका परिचय भारतीय विद्वानों व साधुओं से वहुत है। मैंने डा० सी. कैय्या का वायो-डाटा लिया। उनके वारे में धर्मभ्राता श्री रविन्द्र जैन को वोलना था। निश्चित समय पर हम दोनों मेहमान जैन स्थानक सदर वाजार में पधारे। जैन सभा ने

उन्हें अभिनंदन पत्र समर्पित किया। अतिथियों व हमारा सम्मान किया।

समारोह साध्वी सरिता के मंगलाचरण व प्रवचन से शुरू हुआ। अपने प्रवचन में साध्वी श्री सरिता जी ने प्रवर्तनी श्री पार्वती जी का वर्णन विस्तार से किया। कई बातें उन्होंने प्रवर्तनी के बारे में ऐसी बताई, जिनका हमें पता न था। फिर हुआ मेहमानों का अभिनंदन। उनके गले में हार डाले गए। फिर मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन ने अपना लिखित भाषण व घोषणा पत्र पढ़ा। विदेशी जैन विदूषी इस समारोह से बहुत प्रसन्न हुई। उस ने अपनी सहायक अनुवादिका व शिष्या डा० नलिनि बलवीर की और से धन्यवाद पत्र पढ़ा। मैंने विदूषी डा० कैयूया को अवार्ड की ट्राफी, सम्मान राशि, प्रशस्ति पत्र व शाल ओढ़ाया। डा० नलिनि बलवीर का भी सन्मान किया गया। मेरे द्वारा अगला अवार्ड डा० नलिनि बलवीर को देने की घोषणा की गई। यह अवार्ड बाद में जर्मन राजदूत ने डा० भट्ट की सहायता से जर्मन पहुंचाया गया। इस समारोह में साध्वी सरिता जी ने धन्यवाद करते हुए कहा कि मैं साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की आभारी हूं कि उन्होंने मुझे यह स्वर्णिम अवसर प्रदान किया। मैं उनकी ऋणी हूं। वह हमारी गुरूणी तुल्य है। उनका स्नेह व आर्शीवाद हमें हमेशा मिलता रहा है। भविष्य में मिलता रहेगा। तब से हमारा संपर्क दोनों विदूषीयों से चलता रहा है। उन्होंने हमारे सूत्रकृतांग व निरयवालिका सूत्र में भूमिका लिखी है। मेरा पत्र व्यवहार आप से चलता रहता है।

इसी श्रृंखला में यह अवार्ड विश्व में जैन धर्म का प्रचार करने वाले, जैनाचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज

को चादर, ट्राफी सहित प्रदान किया गया। उन्हें कलिकाल कल्प तरू पद से विभूषित किया गया। यह समारोह विज्ञान भवन में हुआ।

आचार्य डा० नगराज जी महाराज को इस सन्मान को प्राप्त करने वालों में अग्रणी हैं जिन्हें जैन धर्म दिवांकर पद से अलंकृत किया गया। इस पद का प्रतीक चादर, ट्राफी उन्हें प्रदान की गई। उनसे यह अवार्ड उनकी कृति आगम और त्रिपिटक के लिए प्रदान किया गया। इसी क्रम में हम इस अवार्ड को प्राप्त करने वाले साधुओं में एक नाम और सामने आया वह था मुनि श्री रूप चन्द्र जी महाराज। इन संतों ने विदेशों में जैन धर्म जहां प्रभावना की है वहां हिन्दी भाषा में कई ग्रंथों की रचना की है। उनका सम्मान एक सादा समारोह में किया गया। उनकी कृति सुना है मैंने आयुष्मान को सन्मानित किया गया।

आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज की आज्ञानुवर्ती शिष्या डा० साधना जी महाराज वहुत प्रभाविका साध्वी हैं। जहां वह महानधर्म प्रचारिका, समाज सुधारिका, प्रवचन कवियत्रि हैं वहां वह संस्कृत, प्राकृत साहित्य की महान ज्ञाता हैं वह पहली जैन साध्वी हैं जिन्होंने पी.एचडी. की है। उनका शोध निवंध "अपभ्रंश जैन साहित्य" था। इसी ग्रंथ के लिए उन्हें भव्य समारोह में एक चादर ओढाई गई। पूर्व केन्द्रीय संचार मंत्री स. बूटा सिंह ने उन्हें हमारी अवार्ड समिति की और से ट्राफी प्रदान की। इस अवसर पर मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने साध्वी जी का गुण गान किया। उनके उपकारों व जैन समाज के प्रति उन की देन के लिए, समाज का ध्यान उनकी और कराया गया। आचार्य श्री के देवलोक के वाद जिस तरह उन्होंने श्री संघ और आश्रम की देख रेख में जो ध्यान दिया है वह सतुत्य है। यही नहीं

उन्होंने भारी विरोध के वीच आचार्य श्री की समाधि के निर्माण का कार्य जारी रखा है। आचार्य श्री के कार्य को आगे वढ़ाया है। उनकी परम्परा की रक्षा सुन्दर व्यवस्थित ढंग से की है। अगला अवार्ड डा० दमोदर शास्त्री को प्रदान किया गया। उन्होंने संस्कृत भाषा में जैन धर्म पर किये कार्य के लिए दिया गया।

इस अवार्ड के जीवन में एक महत्वपूर्ण प्रसंग तव आया, जव गुरूणी साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज देहली में पधारी। मैं यहां एक वात वता दूं कि महाराज श्री जीवन में दो वार ही देहली पधारे थे। एक वार जव उनके पिता श्री खजान चन्द जैन व माता दुर्गा देवी जी जैन जीवित थे और अंतिम वार उनके स्वर्गवास के वाद देहली पधारे। वहां उन्होंने देहली के विभिन्न भागों को पवित्र किया। चर्तुमास करोल वाग में किया। यह १६६२ की वात है। उस समय हमारे पंजावी ग्रंथ भगवान महावीर जी की द्वितिय आवृति करोल माग के सुश्रावक सेठ सुशील कुमार जैन ने प्रकाशित करवाई थी। उस समय पंजाव कम्पयूटर का नया युग आया था। हमारा यह ग्रंथ लुधियाना में मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन की देख रेख में छपा। उस समय ६ दिसंबर की घटना हुई नहीं थी। पर यह ग्रंथ ६ दिसंवर १६६२ के वाद प्रकाशित होना शुरू हुआ। उन दिनों मालेरकोटला में कफर्यू था। मेरे धर्म भ्राता ने यह ग्रंथ लुधियाना में रह कर एक सप्ताह में प्रकाशित करवा दिया। जव ग्रंथ छपा, तभी कफर्यू भी समाप्त हो चुका था। इसी चर्तुमास की समाप्ति पर वीर नगर गुड मंडी में एक समारोह रखा गया। जिस में साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के विदाई महोत्सव पर, यह अवार्ड कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के जैन वौद्ध धर्म के विद्वान डा० धर्म चन्द्र जैन को दिया गया। उनका शोध

प्रवंध तो वौद्ध धर्म पर था पर आप जैन धर्म के प्रकाण्ड पंडित हैं। जैन नय, व्याकरण इतिहास पर आप का पूर्ण अधिकार है। इस अवसर पर हमारे द्वारा अनुवादित श्री सूत्रकृतांग का पंजावी अनुवाद साध्वी श्री को समर्पित किया गया। डा० जैन ने इस अवसर पर श्री सूत्रकृतांग सूत्र में प्रतिपादित विषयों पर अच्छा प्रकाश डाला। इसी अवसर पर मेरे को डा० जैन पर वोलना था। मैंने इस अवसर पर कहा "आप संस्कृत, प्राकृत भाषाओं के प्रकाण्ड पंडित हैं आप ने अनेकों शोधार्थीयों को जैन धर्म पर पी.एचडी. करवाई है। आज भी इनके आधीन कुछ पी.एचडी. कर रहे हैं। जैन नय निक्षेप पर आप माने हुए विद्वान हैं।

इस अवसर पर साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज ने स्वेच्छा से अगला अवार्ड श्रीमती पुष्पकला जैन को उनके शोध निवंध "स्याद्वाद मंजरी" पर देने की घोषण कर डाली। श्रीमती जैन को यह अवार्ड देने में कुछ विलंव हुआ। श्रीमती जैन एक प्रध्यापिका हैं। उन्होंने इतने गूढ़ विषय पर कार्य किया है। महासाध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की ५०वीं दीक्षा जयंती पर उन्हें यह अवार्ड अनेकों साधु-साध्वीयों, श्रावक व श्राविकाओं के मध्य दिया गया। ऐसा भव्य समारोह उत्तर भारत में कम ही देखने को मिला है।

इस अवार्ड को उस समय और महत्व मिला जव हमारी समिति ने इस अवार्ड को विश्व प्रसिद्ध पंजावी कवियत्री, नावलकार, कहानीकार व निवंधों की लेखिका डा० अमृता प्रीतम को सन्मानित किया गया। उनका जैन धर्म के विभिन्न आयामों के कार्य के लिए यह सम्मान था। श्रीमती अमृता प्रीतम हमारी पूर्व परिचयत लेखिका थीं। उन्हें हमारे द्वारा लिखित सारा साहित्य मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन प्रेषित करते रहे हैं। उन्होंने एक वार मुझे कच्चे धागे का

रिश्ता नामक पुस्तक अपने आवास पर भेंट की थी। यह पुस्तक स्वपनों पर आधारित थी। उसी पुस्तक की प्रेरणा से मैंने अनजाने रिश्ते पुस्तक लिखी। जिसका सम्पादन मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन ने किया था। अमृता जी ने इस पुस्तक का विमोचन भी किया। इस में से एक स्वप्न अपनी पत्रिका नागमणि में प्रकाशित किया था। वह सचमुच संसार की सरल मना लेखिका हैं। अंतराष्ट्रीय स्तर पर संसार में प्रसिद्ध पुरस्कार वह प्राप्त कर चुकी हैं। वह सूफी परम्परा की पक्षधर हैं। उनके विचारों में आजकल आचार्य रजनीश की छाप स्पष्ट है। उन्हें दिल्ली सरकार ने २१वीं सदी की लेखिका घोषित किया है।

उन्हें यह अवार्ड उनकी वृद्धावस्था के कारण घर पर ही सादगी भरे समारोह में दिया गया। अमृता जी ने हमारे साहित्य और प्रभु महावीर के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। उन्होंने साध्वी पावर्ती जी महाराज की क्रांन्तिकारी रचनाओं के लिए उन्हें याद किया। साथ में जैन धर्म की साध्वी परम्परा अच्छी लगी, जो विना किसी भेद भाव से समस्त स्त्री जाति को वराबर का अधिकार देती है। उन्हें इस से पहले भारतीय ज्ञान पीठ अवार्ड मिल चुका था। भारत सरकार का शायद ही कोई अवार्ड हो जो उन्हें न मिला हो।

इस तरह यह अवार्ड का कार्यक्रम चलता रहा। अव साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का स्वर्गवास होने के वाद इस अवार्ड का जिम्मा उनकी विदूषी शिष्या साध्वी सुधा जी महाराज के आधीन हैं, जो हमारे हर कार्य में हमें आर्शीवाद देती रहती हैं।

इंटरनैशनल महावीर जैन शाकाहार अवार्ड

यह अवार्ड अहिंसा, शाकार जो जैन संस्कृति के

प्रमुख सिद्धांत हैं उनका प्रचार प्रसार करने वाले को दिया जाता है। पर आज का समाज इतना दूषित है कि ऐसे व्यक्ति गिने चुने मिलते है। वडे जी प्रयत्न के वाद हमने यह अवार्ड नामधारी नेता श्री एच.एस. हंसपाल को भैण्णी साहिव (लुधियाना) में प्रदान किया। उनके वारे में हमें ज्ञानी जैल सिंह जी राष्ट्रपति के सचिव श्री पंछी ने वताया था। वह उस समय राज्य सभा के सदस्य थे। हमने उन्हें अवार्ड की सूचना देहली में उनके आवास पर दी। उन्होंने अवार्ड स्वीकार करते हुए कहा वसन्त पंचमी को नामधारी सम्मेलन होता है। इस में हमारे सतगुरू जगजीत सिंह जी पधारते हैं आप वहां आ जाईए।

हम भैणी के लिए श्री पंछी के साथ तैयार हुए। सारा गांव नामधारीयों का था। सतगुरू महाराज जी ने अपनी माला से हमारा सन्मान किया। हमारा समारोह दोपहर को रखा गया। मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन ने सतगुरू श्री जगजीत सिंह जी की मौजूदगी में घोषणा पत्र पढ़ा। श्री हंसपाल जी के कार्यों की प्रशंसा की गई। मैंने श्री हंसपाल को शाल, अवार्ड राशि व ट्राफी भेंट की। सतगुरू महाराज जी को व श्री हंसपाल जी को सारा पंजावी जैन साहित्य भेंट किया गया। इस दिन संसार भर के नामधारी इकट्ठे होते है। हमें उस दिन नामधारीयों से संवंधित इतिहासिक स्थल पर घूमाया गया। उनका गाय प्रेम देखने को मिला। उनकी देश भक्ति देखी। सभी नामधारी चमड़े का प्रयोग नहीं करते। सफेद खादी वस्त्र धारण करते हैं - शुद्ध शाकाहारी हैं।

प्रकरण - १०

हमारा साहित्य

साहित्य किसी समाज का दर्पण होता है। जैन साहित्य भारतीय व विदेशी भाषा में प्रकाशित हुआ, हो रहा है, भविष्य में भी होगा। जैन आचार्यों ने जीवन के हर पक्ष पर हर भाषा में साहित्य भारतीय संस्कृति को प्रदान किया है। आज भी लाखों हस्तलिखित ग्रंथ भण्डारों में अप्रकाशित अवस्था में पडे है। जिनका स्वाध्याय करने के लिए अनेकों संस्थाओं का निर्माण हुआ है। जैन आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज कहा करते थे, "जैनों से कई गुणा जैन साहित्य है।" जैन आचार्यों ने साहित्य निमार्ण का एक सागर रचा है। यह परम्परा भगवान ऋषभदेव से भगवान महावीर तक पूर्वों, अंगों, उपांग, छेद सूत्रों प्रर्किणक के रूप में विद्वान रहीं। भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात पूर्वो का ज्ञान लुप्त हो गया। पूर्वो का ज्ञान कितना विशाल था व अन्य आगम जो उपलब्ध हैं उनकी भव्यता का अनुमान देववाचक संकलित नंदी सूत्र में देखा जा सकता है। भगवान महावीर ने मोक्ष के लिए ज्ञान का सर्व प्रथम तत्व माना है। जिस ज्ञान में कोई शंका न हो। जिसे सर्वज्ञों ने कथन किया हो। ऐसे ज्ञान के सबंध में प्रभु महावीर ने मोक्ष मार्ग का कारण बताया है।

'मोक्ष मार्ग में ज्ञान की महत्त्ता को स्वीकार करते हुए प्रभु महावीर फुरमाते हैं :-

पढमं णाणं तओ दया

"साधक को प्रथम ज्ञान अर्जित करना चाहिए उस के पश्चात् उस ज्ञान के अनुसार दया (करूणा) आदि नियमों का पालन करना चाहिए।"

"स्वाध्याय के समान तप भूत काल में था न भविष्य में होगा ना वर्तमान में है।" ऐसा प्रभु महावीर का कथन है।

स्वाध्याय का एक अर्थ तो शास्त्रों का पठन पाठना है, दूसरा अर्थ आत्मा का अध्ययन है। स्वाध्याय करने वाले की कर्म निर्जरा होती है। स्वाध्याय करने वाला महातपस्वी है।

जैन धर्म में साहित्य दो प्रकार है (१) मुक्ति का कारण अंग उपांग साहित्य (२) अलोकिक या मिथ्या श्रुत। जिस श्रुत के पढ़ने से राग द्वेष बढ़े वह मिथ्या श्रुत है। श्रावक को दोनों तरह का साहित्य पठनीय है। पर मुझे तो आराधना सम्यक्त्व साहित्य की करनी है। हम श्रावक हैं, श्रावक धर्म के आराधक हैं। इस धर्म पर चलने का प्रयास करते हैं। इसके प्रचार प्रसार में स्वयं को लगाकर, धर्म की प्रभावना में सहायक बनने का प्रयत्न करना, हमारे जीवन का लक्ष्य है। हमारा सारा साहित्य धर्म के प्रचार प्रसार हेतु है। किसी धर्म की आलोचना हेतु नहीं।

भगवान महावीर के युग से लेकर वीर वि. सं. ९९८ तक आगम साहित्य श्रुत परम्परा से आगे चलता रहा। लिखना ठीक समझा जाता था। फिर आचार्यों ने सोचा "पंचम काल" (कलियुग) के प्रभाव से बुद्धिक्षीण हो रही है, वृहत साहित्य नष्ट हो चुका है। बाकी साहित्य की रक्षा के लिए समस्त साहित्य को लिपिवद्ध करना, संघ हित में हैं" इसी विचार से गुजरात के वल्लभी नगर में ५०० साधुओं का सम्मेलन देवार्धीगणी क्षमाश्रमण की अध्यक्षता में हुआ। जिस में शेष याद साहित्य को लिपिवध किया गया। आज यही साहित्य श्वेताम्बर समाज का आधार है। दिगम्बर परम्परा ने इस साहित्य को कुछ मतभेदों को कारण मानने से इन्कार

करता है। यह सम्प्रदायः आचार्य कुन्दकुन्द जैसे ज्ञानीयों द्वारा रचित साहित्य को आगम तुल्य मानता है। दोनों परम्पराओं में विशेष सिद्धांतिक मतभेद नहीं, हां कुछ वातों को लेकर मामूली मतभेद हैं।

श्वेताम्वर साहित्य में कुछ आगम काफी प्राचीन हैं। उनकी भाषा काफी प्राचीन है। कुछ आगमों की गाथाएं दिगम्वर ग्रंथ मूलाचार में उपलव्ध हैं। समस्त जैन साहित्य का कभी पंजावी अनुवाद नहीं हुआ था। इस का मुख्य कारण पंजावी भाषा की एक लिपि न होना भी हो सकता है। स्वतंत्रता से पहले पंजावी, फारसी गुरूमुखी अक्षरों में लिखी जाती थी, अव भी पाकिस्तान में पंजावी फारसी लिपि लिखी व पढ़ी जाती है। स्वतन्त्रता के पश्चात् इस भाषा की लिपि सिक्खों की धर्म लिपि गुरूमुखी हो गई। इन्हीं गुरूमुखी अक्षरों को पंजावी के रूप में मान्यता मिली। १९६७ के वाद पंजावी भाषा सरकारी भाषा वन गई।

पंजाव में रहने वाले साधारण जैन व अन्य लोग इस भाषा में साहित्य उपलव्ध न होने के कारण जैन धर्म से अनभिज्ञ थे। यह कमी जहां मुझे अखर रही थी, वहां गांव में प्रचार करने वाले साधु साध्वी भी इस कमी को महसूस करते थे, परन्तु उनका काम हिन्दी में चल जाता था। काम रूकता तो गांव में आकर था। इन सभी कमीयों को देख कर मैंने अपने धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन से विचार विमर्श किया। यह विमर्श ही हमारे साहित्यक भविष्य का आधार वना। हम ३१ मार्च १९६९ को जव मिले थे, तव से ही स्वाध्यायशील थे। वहुत सी जैन धर्म व अणुव्रत की परिक्षाएं पास की थीं। श्री रविन्द्र जैन तो पांचवीं कक्षा से जैन शिक्षा ग्रहण कर रहा था। हमें अपना उद्देश्य समझ में आ चुका था। गुरूओं का आशीर्वाद हमारे साथ था। उपाध्याय श्री अमर मुनि जी

महाराज, आचार्य श्री तुलसी जी महाराज, आचार्य श्री सुशील कुमार, आचार्य श्री विमल मुनि जी महाराज, उपप्रवंतनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज, भण्डारी श्री पदम चन्द जी महाराज, वर्तमान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी महाराज, प्रवर्तक श्री फूल चन्द जी महाराज, श्री रत्न मुनि जी महाराज, आत्मनिधि मुनि श्री त्रिलोक चंद जी, मुनि श्री जय चन्द जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त था। फिर हमारा हाथ उपप्रवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज ने थामा। उन्होंने आखिरी श्वास तक साथ निभाया। आज हम जो हैं, जैसे हैं वह सव पंजावी जैन साहित्य व साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के आर्शीवाद से हैं। उनके स्वर्गवास के वाद उनके इस कार्य को उनकी शिष्या साध्वी श्री सुधा जी महाराज वढ़ा रही हैं।

हमारा साहित्य

मैं अपने सारे साहित्य का वर्गीकरण इस प्रकार करता हूं :

विषय	भाषा
१. अनुवादित साहित्य -	अर्धमागधी प्राकृत
२. अनुवादित साहित्य -	हिन्दी
३. अनुवादित साहित्य -	संस्कृत

हमारी मूल रचनाएं :

१. मूल साहित्य - पंजावी

२. मूल साहित्य - हिन्दी

सम्पादित साहित्य :

१. सम्पादित ग्रंथ

२. अभिनंदन ग्रंथ

३. पुरूषोत्तम प्रज्ञा

मेरे द्वारा रचित साहित्य :

१. समर्पित जीवन
२. अनजाने रिश्ते
३. आस्था की ओर बढ़ते कदम

मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन की रचनाएं :

१. श्रमणोपासक पुरूषोत्तम जैन

जिन शाषण प्रभाविका जैन ज्योति श्री स्वर्ण कांता जी महाराज द्वारा सम्पादित साहित्य :

१. अनमोल वचन २. नन्दन मणिकार

साध्वी श्री व हम दोनों द्वारा सम्पादित साहित्य :

१. निरयावलिका सूत्र (अनुवादक आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज)

स्वतन्त्र शोध लेख :

हम इस संदर्भ में सर्वप्रथम अर्धमागधी भाषा से पंजाबी में अनुवादित साहित्य का विवरण देंगें। जो हम मामूली व्यक्तियों की प्रतिष्ठा का कारण बना। इस साहित्य में हमारे द्वारा निम्नलिखित आगमों का अनुवाद किया गया जिनमें अधिकांश प्रकाशित हो चुके हैं :

हमारे द्वारा प्रकाशित आगम हैं :

१. श्री उतराध्ययन सूत्र
२. श्री उपासक दशांग सूत्र
३. श्री सूत्रकृताग सूत्र
४. गच्छाचार प्रकिर्णक
५. तेंदुलवैचारिक
६. वीरथुई

७. गच्छाचार प्रकिर्णक

हमारा अप्रकाशित साहित्य :

१. निरयावलिका सूत्र
२. दशवेकालिक सूत्र
३. ज्ञाता धर्म कथांग सूत्र

यह सूची मैंने हमारे द्वारा अनुवादित, सम्पादित व टीकाकार के रूप में प्रकाशित अर्धमागधी प्राकृत साहित्य की है। जैन तीर्थंकरों ने अपना धर्मउपदेश स्थानीय लोकभाषा में दिया है। इसी भाषा का नाम अर्धमागधी है। इसी भाषा में तीर्थंकरों ने धर्म उपदेश दिया। यह भाषा कई भाषाओं की जननी है। इसका व्याकरण कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य श्री हेम चन्द्र जी महाराज ने किया था। इस का नाम सिद्ध-हेम व्याकरण है। जैन आगमों पर संस्कृत भाषा में टीका आचार्य शीलांकाचार्य व आचार्य अभय देव सूरि ने लिखे हैं। निर्युक्ति की भाषा प्राकृत हैं। संस्कृत व प्राकृत भाषा का मिला जुला रूप चुर्णि में उपलव्ध होता है। र्नियुक्ति के अतिरिक्त राजस्थानी व गुजराती में उपलव्ध हैं। र्निुयुक्तिकार आचार्य भद्रवाहु है। चुर्णि के रचिता आचार्य श्री जिन दास गणिक्षमाक्षमण हैं। इसी तरह विभिन्न भाषाओं में जैन आगमों पर कार्य हर युग में विद्वानों ने किया है। अपनी विद्वता की धाक जमाई है। वर्तमान में आगमों पर मुनि श्री पुण्य विजय, श्री जिन विजय, श्री जंवु विजय श्री आचार्य आत्मा राम जी महाराज, आचार्य श्री तुलसी जी, आचार्य श्री नथ मल (आचार्य महाप्रज्ञ), उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज व आचार्य श्री मिश्री मल्ल के नाम उल्लेखनीय हैं।

श्री उतराध्ययन सूत्र - १ :

श्रमण भगवान महावीर अपना धर्म प्रचार करते